## *चतुर्थ अध्याय*

# ''विवेच्य उपन्यासों में चित्रित स्त्री-पुरुष संबंध-रिश्तों के संदर्भ में''

# चतुर्थ अध्याय

# “विवेच्य उपन्यासों में चित्रित स्त्री-पुरूष संबंध : रिश्तों के संदर्भ में”

**प्रस्तावना -**

संसार में हर स्त्री और पुरूष के बीच कोई न कोई संबंध अवश्य होता है । उस संबंध को ही ‘रिश्ता’ कहते हैं । राकेश जी के उपन्यासों में भी रिश्ते दिखाई देते हैं । उनके कुछ उपन्यासों में माता-पुत्री, माता-पुत्र, जीजा-साली आदि संबंधों (रिश्तों) का चित्रण हुआ है । इसका विस्तारपूर्ण विवेचन इसप्रकार हैं -

## 4.1 माता-पुत्र का संबंध –

### (बीजी और देव)

राकेश के उपन्यासों में माँ-बेटे का भावात्मक, मधुर, पवित्र एवं सौहार्दपूर्ण संबंध परिलक्षित होता है ।

मोहन राकेश द्वारा लिखित ‘अन्तराल’ उपन्यास की नायिका श्यामा है । श्यामा के पति का नाम है देव और सास का नाम है बीजी । बीजी और देव का जो रिश्ता है वह है माँ-बेटे का । दोनों का यह रिश्ता इतने नजदीक होते हुए भी दोनों के विचारों में भिन्नता है । फिर भी दोनों एक-दूसरे की चाह पूरी करने का कार्य करते हैं । देव अपनी इच्छानुसार एक लड़की से शादी करना चाहता था । परंतु देव जिस लड़की से शादी करने के लिए राजी था, वह लड़की उसकी माँ बीजी को पसंद नहीं आती । इसी कारण वह उसकी शादी का विरोध करती है । वह अपनी इच्छानुसार उसे जो लड़की पसंद थी उसी को अपनी बहू बनाकर लाने का हठ करती है । उसी समय देव भी अपने प्यार की कुर्बानी देकर अपनी माँ के पसंद की लड़की श्यामा से शादी करता हैं । देव श्यामा से शादी तो करता है । परंतु उसका दांपत्य जीवन दु:खमय बन जाता है । यह सब वह अपनी माँ की इच्छा की खातिर ही करता है । आज के आधुनिक युग में देव जैसे युवक का बर्ताव दुर्लभ है । इससे ज्ञात होता है कि देव अपनी माँ से बहुत प्यार करता है । अपनी माँ को सुखी रखना वह अपना कर्तव्य समझता है । अपनी माँ की खुशी के लिए वह खुद दु:ख झेलता है । परंतु अपने इस दु:ख का अहसास अपनी माँ को कभी भी होने नहीं देता । वह अपने इस दु:ख का गुस्सा कभी भी उसपर नहीं निकालता । अपनी माँ को तो छोड़ो, अपनी पत्नी को भी कभी डाँटता नहीं ।

देव की माँ बीजी भी अपने बेटे देव से बहुत प्यार करती है । परंतु देव कहीं गलत पत्नी का चुनाव न करे इसी डर के कारण उसे विरोध कर अपने पसंद की बहू लाने का प्रयास करती है । उसमें उसे सफलता भी मिलती है । बीजी का कहना मानने बाला उसका बेटा एक दिन अचानक चल बसता है । देव की मृत्यु के बाद बीजी को बहुत दु:ख होता है । देव के पश्चात उसकी (देव) बेटी बेबी को अपने दिल से चाहती है । बेबी को अपने पास ही रखना चाहती है और रख लेती है । उसे अपने बेटे की धरोहर मानती है । उसे देव का दु:खद दांपत्य देख ग्लानी तथा बहुत पछतावा होता है । देव की मृत्यु कें लिए वह अपने आपको दोषी मानती है ।

देव एक आज्ञा पालन करने वाले बेटे के रूप में सामने आता है । देव आज्ञाकारी पुत्र होने के कारण ही अपनी माँ की इच्छा पूर्ति करने के लिए अपने प्रेम की कुर्बानी देता है । इसप्रकार अपने माँ के लिए प्रेम की कुर्बानी देने वाला देव आज के जमाने में कहाँ मिलेगा ? राकेश जी ने माँ और बेटे के बीच के रिश्ते का बहुत ही सूक्ष्मता से चित्रण किया है ।

इसके अतिरिक्त 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में माँ बेटे के रूप में नीलिमा और उसके बेटे अरूण के रिश्ते का चित्रण भी संक्षिप्त रूप में हुआ है ।

## 4.2 भाई-बहन संबंध -

## (देव और उसकी बहन सीमा)

'अन्तराल' उपन्यास में देव और सीमा का जो रिश्ता है वह बहन भाई का है । देव एक आधुनिक पुरूष के रूप में सामने आता है । देव आधुनिक पुरूष होने के कारण उसे अपनी बहन सीमा का बर्ताव अच्छा लगता है । देव अपनी बहन सीमा से बहुत प्यार करता था । उसके हर हठ को वह पूरा करने की कोशिश करता था । सीमा का बर्ताव देख वह उसे कभी भी डाँटता नहीं । वह खुद भी यह कहता था कि उसे ऐसा ही जीवन जीना चाहिए । देव के इस लाड-प्यार के कारण ही सीमा अपना जीवन खुलेआम जी रही थी । उसे घर के अन्य लोगों का भय नहीं लगता । क्योंकि घर या परिवार का मुखिया ही उसके इस आचरण पर खुश था ।

सीमा भी अपने भाई की हर बात का खयाल रखती थी । वह देव का हर काम उसके शादी के बाद भी बडी लगन से करती है । देव भी सीमा के समान स्वच्छंदी और आधुनिक जीवन को भोगने की लालसा रखनेवाला एक आजाद व्यक्ति था । उसे अपनी बहन का इतना खयाल था कि मरते समय भी उसने अपनी पत्नी श्यामा से कहा था - "मैं (श्यामा) उसके बाद इन दोनों का ध्यान रखूँ, खास तौर से सीमा का जब तक कि उसकी शादी न हो जाए ।"[1] सीमा का खुलेआम जिंदगी जीना उसे अच्छा लगता था । उसका कहना था कि सीमा के समान अन्य लड़कियों को जीना चाहिए । एक बार उसने अपनी पत्नी से कहा भी था कि "लड़कियों को सीमा की तरह जीती जागती होना चाहिए ।"[2] देव सीमा की हर चाहत का आदर करता था ।

देव ने एक आदर्श भाई के नाते अपनी बहन सीमा को पिता की छत्रछाया न होते हुए भी अपनी छत्रछाया में सुखी और आनंदी रखने की कोशिश की । सीमा भी अपने भाई के साथ आत्मीय ढंग से बर्ताव करती थी । परंतु देव की मृत्यु के बाद उसकी आदतें बिगड़ जाती हैं । देव के पश्चात वह बहुत ही खुलेआम जिंदगी जीती है । वह इतनी आगे बढ जाती है कि अपनी माँ तथा भाभी का विरोध होते हुए भी उनके सामने शराब पीती है । धार्मिक बंधनों को तोड़ कर वह अख्तर जैसे मुस्लीम युवक से शादी करना चाहती है । शराब के नशे में मस्त रहकर अपने मन में जो आए उसके अनुसार वह आचरण करती हैं ।

इस प्रकार देव ने बहन को खुलेआम जिंदगी जीने के लिए प्रेरित तो किया है परंतु परिणाम यह होता है कि वह बहुत बिगड़ जाती है । इस तरह एक भाई अपनी बहन को स्वच्छंदता से जीने की आज्ञा देता है परंतु उसकी बहन किस तरह बिगड़ जाती है इसका राकेश जी ने मार्मिक चित्रण किया है । भाई का बहन के साथ प्यार करना कोई बुरी बात नहीं लेकिन बहन का बिगड़ जाना भाई के साथ विश्वासघात है । यह संकेत भी यहाँ मिलता है ।

## 4.3 जीजा-साली संबंध -

### 4.3.1 हरबंस और शुक्ला -

शुक्ला नीलिमा की सगी बहन और हरबंस की साली है । शुक्ला ने अभी-अभी जवानी में प्रवेश किया है । उपन्यास में उसकी आयु उसके विवाह से पहले सत्रह बतायी है । शुक्ला का व्यक्तित्व बहुत ही आकर्षक है इसी कारण कोई भी व्यक्ति उसे देखते ही उसकी ओर आकर्षित हो जाता है । शुक्ला के

आकर्षक व्यक्तित्व के प्रति जीवन भार्गव तथा मधुसूदन जैसे लोगों के साथ-साथ उसके जीजाजी हरबंस भी आकर्षित हो गए हैं । हरबंस अपनी अन्य सालियों की अपेक्षा शुक्ला पर अधिक आकर्षित हैं । शुक्ला भी अपनी जीजाजी से अधिक प्यार करती है । हरबंस और नीलिमा में किसी बात पर चर्चा, बहस या झगड़ा हो जाने पर वह अपनी बहन का पक्ष न लेकर जीजाजी का ही पक्ष लेती थी । शुक्ला के व्यक्तित्व की ओर हरबंस इतना आकर्षित हो गया है कि वह उससे अनुराग करने लगता है । इतना ही नहीं तो शुक्ला भी उसकी ओर इतनी आकर्षित हो गई है कि हरबंस विदेश जाते समय वह उसके साथ जाना चाहती है । परंतु इसमें उसे सफलता नहीं मिलती । हरबंस जब विदेश चला जाता है तब वह सुबकने लगती है । इससे ज्ञात होता है कि वह भावुक भी है । इस तरह अपने जीजाजी की हर बात मानने वाली शुक्ला उनके विदेश चले जाने के बाद उनके अभाव में सुरजीत जैसे अनैतिक जीवन जीनेवाले व्यक्ति के साथ शादी करती है । परंतु उसके साथ वह अपना दांपत्य जीवन अच्छी तरह से जी रही है ।

शुक्ला और उसकी बहन नीलिमा के स्वभाव, आचार-विचारों में फर्क है । शुक्ला अपने पति और जीजाजी का आदर करती है । परंतु शुक्ला उसकी बहन नीलिमा के बर्ताव पर खुश नहीं हैं । वह नीलिमा को समझाती है कि ''भापाजी दिल से इतने अच्छे है कि दूसरों का बड़े से बड़ा अपराध भी क्षमा कर देते हैं । उनकी जगह कोई और आदमी हो, तो कभी नहीं करेगा । आप उनके दोष ही दोष देखती हैं और उनके इस गुण को कभी नहीं देखती ।''[3] हरबंस विदेश में चले जाने के बाद अपनी साली को जन्मदिन के अवसर पर पत्र लिखता है । इन दोनों के स्वभाव पर नीलिमा चिढ़ती है । वह उन दोनों पर शक करती हैं । शुक्ला का अपने पति के साथ हर कार्य में घुलमिल जाना उसे अच्छा नहीं लगता । वह उन दोनों से नफरत करने लगती हैं ।

इस तरह एक-दुसरे के साथ अंधेरे बंद कमरे में रहकर अनुराग करने वाले जीजाजी शुक्ला का विवाह सुरजीत के साथ होने के बाद दुःखी होते हैं । वे उससे (शुक्ला) नफरत करते हैं । उनके दिल में शुक्ला के प्रति नफरत पैदा हो जाने के कारण उससे बात भी नहीं करते । फिर भी शुक्ला का अपने जीजाजी के प्रति जो प्यार था वह कम नहीं होता । जब नीलिमा अपने बीजी के घर चली जाती है तब शुक्ला ही अपने जीजाजी की सेवा करती है । शुक्ला एक आकर्षक और यौवन से परिपूर्ण नारी होते हुए भी अपने पति के प्रति वफादार है, गद्दार नहीं । शुक्ला के स्वभाव को देख हरबंस को संतुष्ट होना चाहिए था परंतु वह उससे नफरत ही करता है ।

राकेश जी ने इस प्रसंग से यह दिखाया है कि शुक्ला के विवाह से पहले जीजा-साली में जो प्यार था वह शादी के बाद नहीं दिखाई देता । इस तरह इन दोनों के बीच जो नाजुक रिश्ता था उसका राकेश जी ने सूक्ष्म चित्रण किया है ।

## 4.3.2 श्यामा और प्रो. मलहोत्रा -

'अंधेरे बंद कमरे' के समान 'अन्तराल' उपन्यास में भी जीजा-साली के रिश्ते का चित्रण हुआ है । दोनों में फर्क इतनाही है कि हरबंस और शुक्ला का संबंध अंधेरे बंद कमरे में ही व्याप्त है । परंतु श्यामा और मलहोत्रा का संबंध स्पष्ट रूप से दिखाई देता है ।

प्रो. मलहोत्रा की साली श्यामा का पति मर चुका है । अब श्यामा का एक मात्र सहारा उसकी मौसेरी बहन थी । प्रो. मलहोत्रा उसके पति है जो शिवालिक कॉलेज में अध्यापक हैं । प्रो. मलहोत्रा अपनी साली श्यामा को सहारा देने का बहाना बनाक्र अपने घर ले आते है । श्यामा के मन में कुछ भी गलत विचार नहीं थ । इसीकारण वह उनके साथ रहने के लिए आती है । किंतु प्रो. मलहोत्रा अपनी साली श्यामा को सहारा देने के बदले उससे यौन-संबंध स्थापित करना चाहते हैं ।

प्रो. मलहोत्रा एक शादी-शुदा आदमी है । वे अपनी पत्नी से संतुष्ट नहीं हैं । अपनी इस अतृप्त इच्छा की पूर्ति के लिए ही श्यामा को एम्. ए. कराने का बहाना और सहारा देने का बहाना बनाकर उसे अपने पास ले आते हैं और अपनी अतृप्त इच्छा की पूर्ति करना चाहते हैं । इसलिए वे श्यामा के व्यक्तित्व के प्रति आकर्षित हो चुके हैं । इससे पहले भी वे उसपर आकर्षित हो चुके थे । इसके बारे में श्यामा कुमार को बताती है - "मैं बारह-तेरह साल की थी ... तब भी जिस तरह मुझे अपने साथ सटाकर बात किया करते थे, उससे मुझे अच्छा नहीं लगता था । बाद में जब मैं पंद्रह - सोलह साल की थी, तब एक बार इन्होंने ऐसी कोशिश की थी ।"[4] प्रो. मलहोत्रा श्यामा के साथ पागलों जैसा बर्ताव करते थे । एक कम उम्र की लड़की को अपनी बाहों में लेकर चुमने वाला आदमी उससे सिर्फ अपनी वासना पूर्ति का ही उद्देश्य रखता है । परंतु श्यामा को प्रो. मलहोत्रा का यह स्वभाव अच्छा नहीं लगता था । वह कभी-कभी गुस्से में आकर डाँटती भी थी । परंतु प्रो. मलहोत्रा पर इसका कुछ भी असर नहीं होता । वे तो उसपर पहले से ज्यादा आकर्षित हो जाते हैं ।

श्यामा अपना अलग व्यक्तित्व विकसित करने के लिए एम्. ए. करना चाहती थी । उसका फायदा उठाकर वे श्यामा को अपने घर ले आते हैं । उसे पढ़ाने के लिए अध्यापक भी ढूँढते हैं । इतना ही नहीं तो वह उस अध्यापक की ओर आकर्षित न हो जाए इसलिए उसकी प्रेम कहानी भी श्यामा को सुनाते हैं । प्रो. मलहोत्रा को हमेशा घर से बाहर भटकना तथा पार्टियों में शामिल होना पसंद था । परंतु जाते समय वे कभी अकेले नही जाते थे । अपने साथ अपनी बीवी को न लेकर साली श्यामा को ही ले जाते थे । श्यामा जब भी कभी पार्टियों में अन्य व्यक्तियों से बातें करती तब उन्हें बुरा लगता था । इसीकारण श्यामा को वे डाँटते भी थे । जीजाजी का डाँटना श्यामा को अच्छा नहीं लगता था । श्यामा भी जीजाजी के बर्ताव को समझ चुकी थी । किसी भी हालत में वह उनके साथ यौन-संबंध स्थापित नहीं करना चाहती । इसलिए वह उनसे अन्तराल रखती है । परंतु प्रो. मलहोत्रा उसे पाने के लिए कई बार उसके साथ अभद्र बर्ताव करने की कोशिश करते है । लेकिन उसमें वह सफल नहीं हो जाते ।

प्रो. मलहोत्रा अपनी साली को किसी भी हालत में पाकर अपनी वासनापूर्ति करना चाहते हैं । अपनी अतृप्त इच्छा की बात साली श्यामा को बताते हुए वे कहते है "अपनी पत्नी से जो चाहिए था, वह उन्हें कभी नही नहीं मिल पाया । विवाह के दिन से वह अपनी ही एक दुनिया में उलझी रही है , उनके (मलहोत्रा) लिए एक मांस की पुतली के अतिरिक्त अभी कुछ नहीं बन पाई ।"[5] साथ ही दूसरोंके बारे में बुरी बातें और अपने बारे में अच्छी बातें बताकर वे उसके दिल में सहानुभूति निर्माण करके उसे अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयत्न भी करते हैं । परंतु उन्हें इस प्रयोग में सफलता नहीं मिलती । श्यामा उनसे दूर रहना ही पसंद करती है ।

प्रो. मलहोत्रा के इस बर्ताव से यह स्पष्ट हो जाता है कि उनके और श्यामा के बीच जो जीजा-साली का रिश्ता है वह सिर्फ नाममात्र ही है । इस रिश्ते में एक जीजा अपनी वासना पूर्ति के लिए पत्नी के होते हुए भी साली से यौन संबंध स्थापित करना चाहता है इसका चित्रण राकेशजीने बहुत ही सूक्ष्मता से किया है । प्रो. मलहोत्रा को अपनी बेसहारा साली को स्नेह तथा सहारा देना चाहिए था । परंतु वे ही उसे भोगना चाहते हैं । इस तरह एक अतृप्त व्यक्ति अपनी इच्छा पूर्ति के लिए क्या-क्या करता है, और यह करते हुए उसे अपने रिश्ते का भी ध्यान नहीं रहता इसका चित्रण राकेश जी ने बहुत ही स्पष्टता तथा मार्मिकता से किया है ।

इस प्रकार राकेश जी ने 'अंधेरे बंद कमरे' और 'अन्तराल' इन दो उपन्यासों में चित्रित जीजा-साली संबंधों की ओर निर्देश किया है । राकेश जी ने इन संबंधों की चर्चा और उसका निर्देश करते हुए यह स्पष्ट किया है कि आधुनिक युग में हरबंस और प्रो. मलहोत्रा जैसे आदमी अपनी काम वासना तृप्त करने के लिए अपनी सालियों पर नजर रखते है । राकेश जी ने इसका यथार्थ चित्रण किंया है । 'अंधेरे बंद कमरे' के जीजा-साली हरबंस और शुक्ला का यह रिश्ता कामवासना के रूप में खुलकर सामने नहीं आता । परंतु 'अन्तराल' के जीजा-साली प्रो. मलहोत्रा और श्यामा का यह रिश्ता कामवासना के रूपमें खुलकर सामने आता है ।

## 4.4 पिता - पुत्री संबंध -

### 4.4.1 खुरशीद और इबादत अली -

राकेश जी ने अपने उपन्यासों में पिता-पुत्री के रिश्ते का भी चित्रण किया है । खुरशीद इबादत अली की इकलौती और लाड़ली बेटी है । इबादत अली पाकिस्तान जाकर लौट आता है । इसी बीच वह अपने मकान को खो बैठता है । परंतु उनकी बेटी खुरशीद ने कचहरी में दावा दाखिल कर अपना हक वापिस ले लिया । इतना ही नहीं तो अपना किराया वसूल करने के लिए किरायेदारों के मकानपर चली जाती है और अपना किराया वसूल करती है । इससे ज्ञात होता हैं कि खुरशीद एक साहसी लड़की थी ।

इबादत अली और खुरशीद की पीढियाँ मुगल बादशहाओं के राज्याश्रय में पली थीं । सितार बजाना यह उनका खानदानी पेशा था । इसका गवाह है उनके एक पूर्वज इम्तियाज अली को शहनशाह जहाँगीर ने अपने हाथों से दिया तमगा । वह अभी भी इबादत अली के पास सुरक्षित है । परंतु इबादत अली की आर्थिक स्थिति दिन-ब-दिन कमजोर हो जाती है । इसका सामना करते हुए वे दोनों तंग आ गए हैं ।

इबादत अली का एक मात्र सहारा है खुरशीद ओर खुरशीद का सहारा है इबादत अली । इन दोनों का सिवा एक - दूसरे के कोई नहीं है । दोनों भी अपनी आर्थिक स्थिति का सामना करते-करते तंग आ चुके हैं । उन्हें किराये के रूप में जो रूपये मिलते थे उससे ही वे अपना गुजारा करते हैं । खुरशीद अपने पिता की सेवा बड़ी लगन से करती है । उसकी सेवा करने में वह किसी भी प्रकार की कसर नहीं करती । इतना ही नहीं तो इबादत अली को अपना स्वास्थ संभालकर रहने की आज्ञा देती है । उन्हें सितार भी बजाने नहीं देती । खुरशीद अपने पिता की जी-जान से सेवा करना चाहती है । खुरशीद एक युवा लड़की है । इसी कारण वह

सजती-सँवारती है । उसे किसी भी बात की लाज-लिहाज नहीं है । उसका यह बर्ताव देख मुहल्ले में रहनेवाली गोपाल की माँ कहती है - "मरी की आँख में जरा भी लाज-लिहाज नहीं । जाने इसे कहाँ का जवानी का जोर चढा हैं ।"[6] खुरशीद का यह बर्ताव मुहल्ले वालों को अच्छा नहीं लगता । जब वह नीडर होकर चलती थी तब कस्साबपुरा की औरतें उसपर टीका-टिप्पणी करती हैं । परंतु वह उसकी चिंता नहीं करती । वह अब मुहल्लेवालों के टीका-टिप्पणीयों से ऊब चुकी है । इससे वह छुटकारा पाना चाहती है और एक दिन अपने पिता को अकेली छोड़कर चली जाती है ।

भारतीय समाज में पुत्रों द्वारा माता-पिता को संभालने का काम किया जाता है । परंतु यहाँ यह महत्वपूर्ण कार्य पुत्री ने किया है ऐसा दिखलाया है । उसने अपने पिता की सेवा करने का मानो व्रत ही ले लिया था । उसके सजने-सँवारने की उम्र में ही उसपर अपने पिता को संभालने की जिम्मेदारी आ जाती है । वह अपने पिता के लिए दवा-दारू का प्रबंध करने में भी पीछे नहीं रहती । वह अपने पिता के लिए अपनी जिंदगी बरबाद करना चाहती है । पिता की खातिर वह अपनी शादी भी नहीं करना चाहती । परंतु वह अपनी भावनाओं को काबू में नहीं रख सकती । एक दिन उसकी भावनाओं का उद्रेक हो जाता है और तब वह कुँवारी माता बन जाती है । उसी समय अपने पिता की इज्जत बचाने के लिए वह अपना पाप अपने साथ लेकर पिता को अकेला छोड़ चली जाती है । इस प्रकार एक लड़की का अपने पिता की सेवा करने का व्रत किस प्रकार टूट जाता है इसका चित्रण राकेश जी ने सूक्ष्मता से किया है ।

### 4.4.2 नबी नागू और उनकी बेटी बेगम -

नबी नागू एक निम्नवर्गीय हाँजी है । उसकी बेटी बेगम है । नबी नागू ने अपनी बेटी की शादी खालका के साथ की थी । नबी नागू एक जिद्दी आदमी था । जब बेगम अपने पति के कलकत्ते से लौटकर आने के बाद अपने पिता को बिना कुछ कहे पति खालका के साथ चली जाती हैं तब नबी बेटी के इस बर्ताव पर इतना क्रोधित हो जाता है कि उसके बाद वह कभी भी उससे मिलने नहीं जाता ।

बेगम भी एक जिद्दी बाप की जिद्दी बेटी थी । जब वह अपने पति के साथ पिता का घर छोड़कर चली आती है तब उसकी मृत्यु के बाद उसका दूँगा देखने तथा उसे बेचने के लिए भी वह नहीं जाती । इससे ज्ञात होता है कि दोनों के स्वभाओं में भिन्नता होने के कारण वे कभी आपस में मिल तथा बोल न सके । इसी कारण उन दोनों के रिश्तों में हमेशा तिरस्कार तथा द्वेष ही पनपता रहा ।

संक्षिप्त में कहा जा सकता है कि यह रिश्ता सुख की अपेक्षा दर्दपूर्ण ही ज्यादा रहा है ।

### 4.4.3 खालका और उनकी बेटियाँ नजमा और नूरा -

खालका एक हाँजी है । वह अपना सारा खर्चा अपने डूँगे पर चलाता है । उसे दो बेटियाँ हैं एक नजमा और दूसरी नूरा ।

नजमा का विवाह कादिर के साथ हो चुका है । कादिर द्वारा नजमा को अच्छा न देखना तथा उन्हें पीटने के कारण मायके चले आना स्वाभाविक है । नजमा जब अपने पिता के घर लौटकर आती है तब अपने जीवन पर रोती है । इससे खालका को बुरा लगता है । वह उसे आधार देता है तथा हिम्मत न हारने की सलाह देता है । तो कभी-कभी अपने दामाद की मारपीट को सहन करता है । यहाँ पर उसकी सहनशीलता स्पष्ट होती हैं ।

दूसरी लड़की नूरा जब मामदा के साथ घूमती रहती है तो यह खबर सुन सहनशील खालका का खून चूप नहीं बैठता । वह क्रोधित हो जाता है । गुस्से में वह बहुत कुछ बकता रहता है । वह नूरा को डाँटता है । परंतु नूरा चूप रहती है । वह उसके एक भी सवाल का जवाब नहीं देती । खालका उसके हाथ पीले करने का निश्चय करता है । इससे ज्ञात हो जाता है कि खालका का अपनी बेटियों के साथ जो रिश्ता है वह ज्यादातर अपनेपन का है । अपनी बेटियों को वह सही रास्ता दिखाने का प्रयत्न करता है । परंतु बेटियों को उसमें सफलता नहीं मिलती ।

उपर्युक्त विवेचन के बाद निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि इस उपन्यास में चित्रित बाप-बेटियों के रिश्तों में ज्यादातर अपनापन तथा लगाव का अभाव होने के कारण उनका रिश्ता सुख से युक्त नहीं है।

राकेश जी के 'न आने वाला कल' उपन्यास में पिता और बेटी के रूप में शारदा और उसके पिता का रिश्ता सामने आता है । परंतु वह भी संक्षिप्त रूप में ही चित्रित है । उपन्यास में बाप-बेटी के आपसी संबंधों का चित्रण बहुत ही कम मात्रा में उपलब्ध है ।

**निष्कर्ष -**

'रिश्ते के संदर्भ में राकेश जी के उपन्यासों में प्राप्त स्त्री-पुरूष संबंध का अध्ययन करने के बाद यह पता चलता है कि राकेश जी ने परिवार के सदस्य तथा उनके रिश्तों का चित्रण बहुत ही सूक्ष्मता से किया है ।

उनका 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में चित्रित पिता-पुत्री, माता-पुत्री तथा जीजा-साली के रिश्तों का अध्ययन करने के बाद यह ज्ञात होता है कि दोनों सदस्य एक-दूसरे को पाना चाहते हैं । दोनों को भी एक-दूसरे के सहारे की आवश्यकता है । इसलिए एक-दूसरे का खयाल रखते हैं । इस उपन्यास के पात्र इबादत अली तथा खुरशीद के आर्थिक स्थिति का चित्रण कर अल्पसंख्याक जाति की समस्याओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है । ठकुराईन तथा निम्मा जिस बस्ती में रहती हैं वहाँ का चित्रण कर राकेश जी ने दिल्ली जैसे महानगर की एक गंदी बस्ती और वहाँ की गरीब जनता की ओर संकेत किया है । ऐसे महानगर में हरबंस जैसे व्यक्ति अपनी मर्यादा छोड़ अपनी साली को पाना चाहते है । इस प्रकार आज के आधुनिक महानगर में बदले सामाजिक मूल्यों का सही चित्रण करने में राकेशजी को पर्याप्त सफलता मिली है ।

राकेश जी का दूसरा उपन्यास 'न आने वाला कल' में इसके बारें में ज्यादा चित्रण नहीं हुआ हैं । इसमें पिता-पुत्री के रिश्ते का संक्षिप्त चित्रण उपलब्ध है । शोभा विधवा होते हुए भी उसके पिता उसका विवाह करना चाहते हैं । उन्हे सफलता भी मिलती है । यह दिखाकर राकेश जी ने आधुनिक युग में होनेवाले विधवा विवाह का संकेत दिया है तो शारदा की जिंदगी उनके पिता के आर्थिक अभाव के कारण किस प्रकार नरक बन जाती है यह दिखाकर बम्बई जैसे महानगर मे होनेवाले आधुनिक बदलाव तथा आर्थिक समस्या का आँखों-देखा हाल भी चित्रित किया है ।

उनके तृतीय उपन्यास 'अन्तराल' में माता - पुत्र के रिश्ते को दिखाकर यह दिखाया है कि एक माता अपने हठ के लिए अपने पुत्र को उसके प्यार की कुर्बानी देने के लिए बाध्य करती है । इससे ज्ञात होता है कि इनके रिश्ते में स्वार्थने जगह ले ली है । साथ ही भाई-बहन तथा जीजा-साली के रिश्ते को स्पष्ट कर समाज में बदलते तथा बिगड़ते जा रहे रिश्तों का यथार्थ चित्रण किया है ।

राकेश जी के चौथे उपन्यास 'काँपता हुआ दरिया' में राकेश जी ने पिता-बेटियों के रिश्ते का चित्रण तो किया है लेकिन यह रिश्ता बिगड़ा हुआ ज्ञात होता है । इस रिश्ते के हर पात्र में अहं ज्यादा होने के कारण उनका रिश्ता सिर्फ नाम मात्र ही प्रतीत होता है ।

अन्त में इतना ही कहा जा सकता है कि सभी सदस्यों के रिश्ते सिर्फ रिश्ते ही बन चुके है वे सभी अपनी-अपनी दृष्टि से जीना चाहतें हैं । उनके रिश्तों में आत्मीयता के बदले स्वार्थ का महत्त्व ज्यादा दिखाई देता है ।

## संदर्भ ग्रंथ - सूची


1. मोहन राकेश - अन्तराल, पृष्ठ - 74
2. वही, पृष्ठ - 74
3. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृष्ठ - 195
4. मोहन राकेश - अन्तराल, पृष्ठ - 50
5. वही, पृष्ठ - 126
6. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृष्ठ - 18